कृषि विज्ञान केन्द्र, सहारनपुर

अंडा उत्पादन हेतु मुर्गी पालन एवं उद्यमिता विकास

• **कृषक विवरण**	:	श्री वाजिद खान ग्रांम एव पोस्ट– धारौला बलाक– नकुड़ जिला – सहारनपुर मो0 –8006287007 उम्र–42 वर्ष शिक्षा– कक्षा 9 जोत– 0 है0
• **विषय क्षेत्र**	:	पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन/ मुर्गी पालन
• **समस्या/चुनौती**	:	स्वरोजगार स्थापित, वर्ष भर आय अर्जित कर अधिक लाभ प्राप्त करना।
• **तकनीक का विवरण**	:	श्री वाजिद खान मुर्गी पालन में रुचि रखते हैं तथा ब्रॉयलर उत्पादन का कार्य छोटे स्तर पर शुरू किया परंतु उन्होंने अंडा उत्पादन हेतु मुर्गी पालन के कार्य को चुना।
• **व्यवहारिक उपयोगिता**	:	पौष्टिक आहार आज की आवश्यकता है जिसमें प्रोटीन विशेष कर , अंडा प्रोटीन का अच्छा स्रोत है जिसकी मांग हमेशा बनी रहती है इस रोजगार से वर्ष भर आय सृजन एवं मृदा उर्वरता में मदद मिलती है।
• **आर्थिकी**	:	➢ तकनीकी रूप से मृदा स्वास्थ्य में सुधार तथा शुद्ध आय में बढ़ोतरी ➢ 2000 लेयर से वर्ष भर में शुद्ध लाभ 3 लाख प्राप्त हो जाता है वर्ष 2020 से यह कार्य प्रारंभ किया।
• **तकनीकी ग्राह्यता एवं क्षैतिज विस्तार**	:	कृषकों में यह व्यवसाय दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है, 15 कृषकों तक तकनीकी का विस्तार किया।
• **समाजिक स्तर**	:	➢ अण्डा उत्पादन से प्राप्त आय द्वारा अपने रहने हेतु मकान का निर्माण कराया। ➢ कृषि विभाग स्तर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया है।

लेयर इकाई का भ्रमण करते हुए कृषक	लेयर इकाई का भ्रमण करते हुए कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र, सहारनपुर

प्राकृतिक खेती एवं देशी गौवंश पालन			
• **कृषक विवरण**	:	श्री सुभाष पंवार ग्राांम एव पोस्ट– पहासू बलाक– रामपुर मनिहारन जिला – सहारनपुर मो0 –8755790666 उम्र–47 वर्ष शिक्षा–स्नातक जोत–1.2 है0	
• **विषय क्षेत्र**	:	मिश्रित खेती	
• **समस्या/चुनौती**	:	स्वरोजगार स्थापित, वर्ष भर आय अर्जित कर अधिक लाभ प्राप्त करना।	
• **तकनीककाविवरण**	:	श्री सुभाष जी प्राकृतिक खेती में रुचि रखते हैं वर्ष में धान गेहूं हरा चारा उगाते हैं परंतु उन्होंने देशी गौपालन के साथ प्राकृतिक खेती को वरीयता दी।	
• **व्यवहारिकउपयोगिता**	:	प्राकृतिक खेती आज की आवश्यकता है विशेष कर मृदा उर्वरता, मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण में सुधार तथा गोवंश संरक्षण को बढ़ावा देना है	
• **आर्थिकी**	:	➢ मृदा स्वास्थ्य में सुधार तथा शुद्ध आय में बढ़ोतरी ➢ 1–2 हेक्टेयर में धान गेहूं हरा चारा के साथ 26 गोवंश से प्राप्त उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर वर्ष में 7 लाख रुपए का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ वर्ष 2019 से कृषि कार्य प्रारंभ किया।	
• **तकनीकी ग्राह्यता एवं क्षैतिज विस्तार**	:	कृषकों में प्राकृतिक खेती पर रुझान बढ़ रहा है, 20 कृषकों तक तकनीकी का विस्तार।	
• **समाजिक स्तर**	:	➢ कृषि एवं गौपालन से प्राप्त आय द्वारा नई कार का क्रय एवं मकान का निर्माण कराया। ➢ श्री सदारंग गौ सेवा संस्थान का पंजीकरण कराकर गौ वंश संरक्षण का कार्य प्रारम्भ किया। ➢ कृषि विभाग स्तर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया है।	

गौवंश इकाई	प्राकृतिक खेती द्वारा उत्पादित गेहूं की फसल

कृषि विज्ञान केन्द्र, सहारनपुर

कृषि, नर्सरी, मशरुम, कृषि विविधीकरण

• **कृषक विवरण**	:	श्री मोनीपाल ग्राम–मांझीपुर, पोस्ट–संसारपुर ब्लांक–मुज्फफराबाद जिला–सहारनपुर मो0– 9758000841 उम्र– 32 वर्ष शिक्षा–इन्टर के बाद पालीटेक्नीक(आई.टी.) जोत–0.8 हे0	
• **विषय क्षेत्र**	:	कृषि विविधीकरण	
• **समस्या/चुनौती**	:	समय–समय पर वर्ष भर अधिक आय प्राप्त करना	
• **तकनीक का विवरण**	:	विगत 5 वर्ष पूर्व गेंहू, धान खीरा लगाते रहे है।वर्ष भर अधिक आय लेने हेतु कृषि विविधीकरण अपनाया इसके अन्तर्गत गेंहू, धान आलू खीरा बागवानी नर्सरी मशरुम उत्पादन कर रहे है।	
• **व्यवहारिक उपयोगिता**	:	आजकल परिवारिक एवं कृषि निवेशो हेतु समय–समय पर आय की आवश्यकता होती है कृषि विविधीकरण से आय में वृद्वि हुई है। स्पेन्ट कम्पोस्ट से मृदा उर्वरता में सुधार होता है।	
• **आर्थिकी**	:	➢ तकनीकी रुप से मृदा स्वास्थ्य सुधार तथा शुद्व आय में बढोत्तरी हुई। ➢ प्रति वर्ष जन सेवा केन्द्र से 81000/ मौसमी+आम बाग से 200000/ नर्सरीसे 7 लाख ➢ मशरुम बटन एवं ढिगरी से 5 लाख रु. कुल 1481000/ प्रति वर्ष आय हुई। श्री मोतीपाल के वर्ष 2018 में 3से 4 लाख प्रति वर्ष आय होती थी।	
• **तकनीकी ग्राह्यता एवं क्षैतिज विस्तार**	:	2500 कृषको तकनीकी का विस्तार	
• **समाजिक स्तर**	:	➢ कृषि, नर्सरी एवं मशरुम उत्पादन से प्राप्त आय द्वारा मकान का निर्माण कराया, बच्चो की शिक्षा तथा इकाई का विस्तार किया ➢ कृषि विभाग स्तर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया है।	

बटन मशरूम उत्पादन हेतु झोपड़ी	बटन मशरूम उत्पादन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सहारनपुर

कृषि विविधीकरण (अमरुद एस्पालियर प्रणाली,आम,आड़ू, आटोमेशन ड्रिप, स्वेलमोस्चर सेंसर, बेदर तकनीकी उपयोग)			
• **कृषक विवरण**	:	श्री सुशील कुमार ग्राम–झिवाहेडी, जयन्तीपुर पोस्ट मुज्फफराबाद ब्लांक–मुज्फफराबाद जिला–सहारनपुर मो0– 9582596704 उम्र –39 वर्ष शिक्षा स्नातक(बी..टेक.) जोत–7.5 हे0	
• **विषय क्षेत्र**	:	कृषि विविधीकरण	
• **समस्या / चुनौती**	:	कृषि निवेशो एवं कृषि उत्पादन तकनिकी का समुचित उपयोग करके रवर्ष भर अधिक आय प्राप्त करना।	
• **तकनीक का विवरण**	:	श्री सुशील कुमार कृषि में ईंजीनियरिंग तकनिकी का उपयोग करने में रुचि रखते है। इन्होने 6 हे0 क्षेत्रफल में ड्रिप और स्पीकलरइरीगेशन प्रणाली और स्वालमॉस्चर संसर, बीदर स्टेशन लगाकर उवर्रक, सिचाई, जल आदि मैनेजमैंट किया। अमरुद से अधिक फसल प्राप्त करने हेतु एस्पालियर प्रणाली, फ्रूटबैगिंग, फेरोमैनट्प तकनिकी अपना रहे है।	
• **व्यवहारिक उपयोगिता**	:	कृषि में इजीनियरिंग निवेशो तकनिकी का उपयोग करक` कृषि निवेश जैसे पोषक तत्व, पानी, लेवर उपयोग समुचित मात्रा में होने से उत्पादन लागत कम होती है और आय में वृद्वि हो रही है। अमरुद में एस्पालियर तकनिकी से वनस्पतिक वृद्वि को कम करके और फ्रूटबैगिंग, फेरोमैनट्प तकनिकी अपनाकर उत्पादन बढाया और खाली स्थान में सहफसली के रुप में दलहनी फसले लेकर मृदा उर्वरता के साथ शुद्व लाभ बढ रहा है।	
• **आर्थिकी**	:	➢ तकनीकी रुप से मृदा स्वास्थ्य सुधार ➢ आम की विभिन्न नवीनतम प्रजातियों की फलत से 3 एकड में 12 लाख ारु ➢ आडू से 1 एकड से 2 लाख रु, नाग 1 एकड से 1.5 लाख कुल वर्ष भर में कुल लाख रु. अर्जित करते है।	
• **तकनीकी ग्राह्यता एवं क्षैतिज विस्तार**	:	क्षैतिज प्रसार तथा कृषको के विस्तारको में तकनीकी का प्रचार–प्रसार करके 10 कृषको तक कृषि तकनीकी विस्तार किया।	
• **समाजिक स्तर**	:	➢ कृषि विविधीकरण से प्राप्त आय द्वारा कृषि की आधुनिक तकनीकी जैसे स्वायन मास्यर,मौसम प्रयोगशाला मोबाइल कन्ट्रोल सिस्टम अपनाया और बच्चो की पढाई एवं नटाफील इरीगेशन इण्डिया कम्पनी बनाकर कार्य कर रहे है। ➢ कृषि विभाग स्तर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया है।	

अमरुद (एस्पालियर प्रणाली)	स्वालमॉस्चर सेंसर, बीदर स्टेशन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सहारनपुर

जैविक खेती एवं एकीकृत नाशी प्रबंधन तकनीकी			
• **कृषक विवरण**	:	कुमारी सुभावरी चौहान ग्राम–कोठली बहलोलपुर पोस्ट जहानपुर ब्लांक–मुज्फफराबाद जिला–सहारनपुर मो0– 9758932344 उम्र 19 वर्ष शिक्षा स्नातक(आर्ट) जोत–2.5 हे0	
• **विषय क्षेत्र**	:	जैविक खेती एवं प्राकृतिक खेती	
• **समस्या/चुनौती**	:	विष मुक्त खेती से उत्पादन करना और इसके मूल्यवर्धक उत्पाद की बिक्री करके अधिक आय प्राप्त करना।	
• **तकनीक का विवरण**	:	कुमारी सुभावरी चौहान जैविक खेती में रुचि रखती है उन्होने वर्ष 2015 से परम्परागत खेती छोडकर जैविक खेती और एकीकृत नाशी जीव प्रबधंन तकनिकी अपनाई।	
• **व्यवहारिक उपयोगिता**	:	स्वास्थ वर्धक एवं पौष्टिक उत्पाद की आज कल मांग अधिक है। मूलवर्धन उत्पादको को शिवालिक नेचूरल फूड के नाम से फार्म बनाकर के माध्यम से बिक्री करके आय सृजित कर रहे है।	
• **आर्थिकी**	:	➢ 10 एकड क्षेत्रफल में प्राकृतिक गन्ना उत्पादन से मूलवर्धन 15 से अधिक प्रकार के जैविक गुड एवं औषधी गुड की टिक्की की बिक्री करके प्रति वर्ष 20–25 लाख ➢ शुद्व देशी गाय घी से 5 लाख ➢ कृषि उत्पाद ब्रिकी से 3 लाख से अधिक कुल रु 28 से 32 लाख रु प्रति वर्ष आय हो रहा है।	
• **तकनीकी ग्राह्यता एवं क्षैतिज विस्तार**	:	कृषको एवं उपभोगताओं में जैविक खेती उत्पाद प्रयोग करने	

		की मांग दिन प्रति दिन बढती जा रही है। 26 कृषको तक कृषि तकनीकी विस्तार किया।
• **समाजिक स्तर**	:	➢ कृषि आय से गौपालन सुधार जैविक गन्ना उत्पादन और शिवालिक खाद्य प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की। ➢ कृषि विभाग स्तर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया है।

जैविक गन्ना उत्पादन	लाइट ट्रेप हेतु जागरूकता कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र, सहारनपुर

जैविक खेती एवं जैविक खेती हेतु कृषि निवेश प्रयोग प्रोत्साहन			
• **कृषक विवरण**	:	श्री तरुण सिघल ग्राम–तरनपुरा पोस्ट कलसिया लांक–सढौली कदीम जिला–सहारनपुर मो0– 7905109097 उम्र –39 वर्ष शिक्षा– कृषि स्नातकोत्तर(सस्य विज्ञान) जोत–0.8 हे0	
• **विषय क्षेत्र**	:	जैविक खेती एवं गुणवत्ता परक कृषि उत्पादन	
• **समस्या/चुनौती**	:	आम के बाग में फल मक्खी,होपर, कढी कीट प्रकोप से फलों में कालापन हो जाने के कारण उत्पाद का बिक्री मूल्य नही मिल पाने से नुकसान हो रहा था जिसकी रोक थाम एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन करके आय बढाना।	
• **तकनीक का विवरण**	:	श्री तरुण सिघल जैविक एवं गुणवत्ता युक्त उत्पादन में रुचि रखते है इन्होने वर्ष 2015 से आम कीटो का प्रबंधन एकीकृत नाशी जीव प्रबंधन तकनीकी अपनाकर शुरु किया और गुणवत्ता युक्त उत्पादन किया।	
• **व्यवहारिक उपयोगिता**	:	मैंगो बेल्ट होने के कारण फलों का निर्यात करके आय अधिक हो रही है आम में लगने वाले प्रमुख कीट होपर, फल	

		मक्खी, कढी कीट का प्रबंधन लाईटट्रेप, मेटारसजिएम, मिथाइल यूजीनाल ट्रेप, फ्रट बैगिंग आदि का प्रयोग करके गुणवत्त युक्त जैविक उत्पादन कर रहे है।
• **आर्थिकी**	:	➢ आम के फलों में एकीकृत नाशजीव तकनिकी का प्रयोग करने से उत्पादन लागत कम हो रहा है जैविक उत्पादन हेतु कृषको को कृषि निवेश भी उपलब्ध करते है। ➢ कृषि से प्रति वर्ष कुल रु 15 से 20 लाख मिल रहा है। ➢ तकनीकी प्रयोग से मृदा में मित्र जीवों की संख्या में बढतरी देखी जा रहा है।
• **तकनीकी ग्राह्यता एवं क्षैतिज विस्तार**	:	कृषको एवं उपभोगताओं में जैविक खेती उत्पाद प्रयोग करने की मांग दिन प्रति दिन बढती जा रही है। 35 कृषको तक कृषि तकनीकी विस्तार किया।
• **समाजिक स्तर**	:	➢ कृषि आय से बच्चो की शिक्षा एवं इफको एजेंसी लेकर कार्य कर रहे है। ➢ कृषि विभाग स्तर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया है।

मिथाइल यूजीनाल ट्रेप का प्रदर्शन	फेरोमोन ट्रेप का प्रदर्शन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सहारनपुर

पोपलर नर्सरी व हल्दी की खेती			
• **कृषक विवरण**	:	श्री जीवन सिंह ग्रांम एव पोस्ट–ननेड़ावेद वेगमपुर बलाक–पुंवाँरका जिला – सहारनपुर मो0 –9729384829 उम्र–34 वर्ष शिक्षा– स्नातक जोत–5.0 है0	
• **विषय क्षेत्र**	:	कृषि वानिकी एवं कृषि विविधीकरण	

• **समस्या / चुनौती**	:	स्वरोजगार स्थापित वर्ष भर आय अर्जित कर अधिक लाभ प्राप्त करना।
• **तकनीक का विवरण**	:	श्री जीवन सिंह कृषि विविधीकरण में रूचि रखते है। वर्ष में प्रायः आम, गेंदा, मसूर, गन्ना, हल्दी उगाते है परन्तु उन्होंने कृषि विविधीकरण को वरीयता दी।
• **व्यवहारिक उपयोगिता**	:	फसल पद्वति में विविधीकरण आज की आवश्यकता है, विशेषकर छोटे कृषकों तथा बड़े पैमाने पर कृषि प्रणाली में इससे रोजगार के अवसरों में वद्वि तथा आय सृजन में वृद्वि मदद मिलती है। मृदा उर्वरता भूमि क्षरण की स्थिति में सुधार एवं कृषि विविधता को बढ़ावा मिलता है।
• **आर्थिकी**	:	➢ तकनीकी रूप से मृदा स्वास्थ्य में सुधार तथा शुद्व आय में बढ़ोत्त्री, ➢ एक एकड़ मे हल्दी एवं पापलर से 4.0 लाख का का शुद्व लाभ प्रसंस्करण द्वारा हल्दी का पाउडर तैयार कर बेंचा गया। ➢ पोपलर पौध 30 रू0 प्रति पौध की दर से एक एकड़ में रू 6,60,000 की हुई । 2009 से रू 10,000 पर कार्य प्रारम्भ किया गया । वर्तमान में 15 एकड़ है लगभग 3 करोण की सम्पति कर ली गई है।
• **तकनीकी ग्राह्यता एवं क्षैतिज विस्तार**	:	कृषकों द्वारा आसान ग्राहता, 1200 कृषकों तक
• **समाजिक स्तर**	:	➢ कृषि से प्राप्त आय से 15 हे0 में क्षेत्रफल ठेके पर लेकर नर्सरी का विस्तार किया। ➢ कृषि विभाग स्तर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया है।

नर्सरी	नर्सरी

कृषि विज्ञान केन्द्र, सहारनपुर

नर्सरी मछली पालन व आम वागवानी		
• **कृषकविवरण**	:	श्री महक सिंह ग्रांम एव पोस्ट–चौरादेव बलाक–पुंवाँरका जिला – सहारनपुर मो0 –8979407407 उम्र– 59 वर्ष शिक्षा– स्नातक जोत–5.0 है0
• **विषय क्षेत्र**	:	उधान एवं कृषि विविधीकरण
• **समस्या/चुनौती**	:	स्वरोजगार स्थापितः वर्ष भर आय अर्जित कर अधिक लाभ प्राप्त करना।
• **तकनीक का विवरण**	:	श्री महक सिंह कृषि विविधेकरण में रूचि रखते है। वर्ष में प्रायः अमरूद ,आड़ू, लीची, पॉपलर एवं मछली पालन करते हैं और उन्होंन कृषि विविधीकरण को वरीयता दी।
• **व्यवहारिक उपयोगिता**	:	फसल पद्वति में विविधीकरण आज की आवश्यकता है, विशेषकर छोटे कृषकों तथा बड़े पैमाने पर कृषि प्रणाली में इससे रोजगार के अवसरों में वद्वि तथा आय सृजन में वृद्वि मदद मिलती है। मृदा उर्वरता भूमि क्षरण की स्थिति में सुधार एवं कृषिविविधता को वढ़ावा मिलता है।
• **आर्थिकी**	:	➢ तकनीकी रूप से मृदा स्वास्थ्य में सुधार तथा क्षेत्र/परिवार शुद्व आय में बढ़ोत्तरी, ➢ एक एकड़ मे गन्ना,लीची, आम वं मछली पालन,पॉपलर से 18.0 लाख का शुद्व पॉपलर प्रति पेड़ 3000.0 रू0 प्रति पेड़ की दर से 13 एकड़ में रू 1800000.0 की हुई । ➢ 2009 से रू 10,00000.00 पर कार्य प्रारम्भ किया गया वर्तमान में 13 एकड़ है लगभग 22 करोड़ की विगत 10 वर्षो में संम्पति कर ली गई है।
• **तकनीकी ग्राह्यता एवं क्षैतिज विस्तार**	:	कृषकों द्वारा आसान ग्राहता, 600 कृषकों तक प्रसार तथा कृषकों में विस्तारकों की संख्या तकनीकी का विस्तार।
• **समाजिक स्तर**	:	➢ कृषि आय से जैविक शिक्षा मकान का कार्य किया ➢ कृषि विभाग स्तर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया है।

सह फसली खेती गन्ना + पोपलर

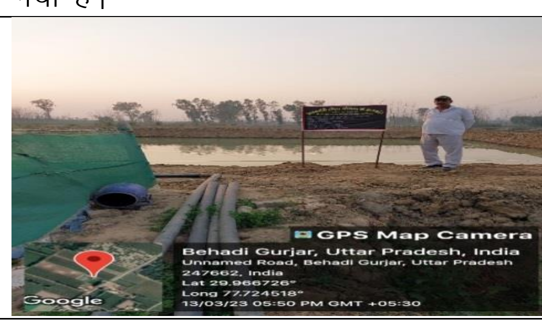

मछली पालन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सहारनपुर

प्राकृतिक खेती एवं जैविक खेती		
• **कृषकविवरण**	:	श्री सुरेशपाल सिंह ग्राांम एवं पोस्ट–खेड़ा मुगल बलाक–नागल जिला – सहारनपुर मो0 –8630645290 उम्र– 60 वर्ष शिक्षा–इन्टरमीडिऐट जोत– 3.6 है0
• **विषय क्षेत्र**	:	संरक्षित खेती
• **समस्या / चुनौती**	:	स्वरोजगार स्थापित– वर्ष भर आय अर्जित कर अधिक लाभ प्राप्त करना।
• **तकनीक का विवरण**	:	श्री सुरेशपाल सिंहजी प्राकृतिक खेती एवं जैविक खेती में रूचि रखते हैं वर्ष में धान, गन्ना, गेहूं हरा चारा उगपते हैं परंतु उन्होंने देशी गौपालन के साथ प्राकृतिक खेती एवं फसल अवशेष प्रवन्धन कर मृदा स्वास्थ्य को वरीयता दी।
• **व्यवहारिक उपयोगिता**	:	प्राकृतिक खेती आज की आवश्यकता है विशेष कर मृदा उर्वरता, मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण में सुधार तथा गोवंश संरक्षण को बढ़ावा देना है।
• **आर्थिकी**	:	➢ मृदा स्वास्थ्य में सुधार तथा शुद्ध आय में बढ़ोत्तरी ➢ 2 हेक्टेयर में धान गेहूं हरा चारा 1.5 है एवं 04 गोवंश से प्राप्त उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर वर्ष में 12 लाख रुपए का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ।
• **तकनीकी ग्राह्यता एवं क्षैतिज विस्तार**	:	कृषकों में प्राकृतिक खेती पर रुझान बढ़ रहा है, 16 कृषकों तक तकनीकी का विस्तार
• **समाजिक स्तर**	:	➢ कृषि आय से बच्चो को अच्छी शिक्षा–दीक्षा दी व उन्नतशील किसान में अपनी पहचान बनाई। ➢ कृषि विभाग स्तर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया है।

फसल अवशेष प्रवन्धन	प्राकृतिक खेती द्वारा उत्पादित गेहूं की फसल

कृषि विज्ञान केन्द्र, सहारनपुर

गौ–आधारित उत्पाद दीपक व धूपबत्ती तथा हवन सामग्री		
• **कृषक विवरण**	:	श्रीमति शारदा देवी पत्नी श्री सुरेन्द्र कुमार प्रकाश ग्राम सॉचलू पोस्ट रामपुर मनिहारान सहारनपुर मो0 –8630645290 उम्र–36 वर्ष शिक्षा– प्राईमरी तक
• **विषय क्षेत्र**	:	लघु उद्यमिता का विवधिकरण
• **समस्या/चुनौती**	:	स्वरोजगार स्थापित परिवार में केवल इनके पति ही कमाई का क्षोत्र है जिससे ये अपने परिवार का पालन पोषण एवं अपने बच्चो की पढाई लिखाई करवा पाने में असमर्थ थे।
• **तकनीक का विवरण**	:	श्रीमति शारदा देवी ने गो आधारित उत्पाद दीपक व धूपबत्ती तथा हवन सामग्री बनाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया
• **व्यवहारिक उपयोगिता**	:	घर पर रहकर अपने साथ 10 महिलाओं को जोडकर जागरुक किया तथा गोबर से दीपक बनाना शुरु कराया जिससे समूह की हर एक महिला को प्रति माह शुद्व लाभ 85000 रु का हुआ
• **आर्थिकी**	:	➢ 22 जनवरी 2024 श्रीराम मन्दिर अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के लिये 50 हजार का दीपक बनाने का आर्डर मिला दीपक रु 4 प्रति की दर से श्रीमति शारदा देवी जी को रु0 2.0 लाख की प्राप्ति हुई जिससे समूह की एक माह का शुद्व लाभ 85000 रु का हुआ।
• **तकनीकी ग्राह्ययता एवं क्षैतिज विस्तार**	:	श्रीमति शारदा देवी ने 10 महिलाओं को स्वयं सहायता समूह बनाया है जो गोबर के विभिन्न उत्पाद बनाकर बेचती है। श्रीमति शारदा देवी प्रशिक्षण देने के लिये अन्य गॉवों में भी जाती है, जिससे महिलाओं को आत्मनिर्भर बनया जा सके और स्वय रोजगार से जुड
• **समाजिक स्तर**	:	➢ ग्रामीण महिलाओ के जीवन स्तर में सुधार। ➢ कृषि विभाग स्तर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सहारनपुर

लो टनल विधि से सब्जी नर्सरी उत्पादन			
• **कृषक विवरण**	:	नाम –राकेश कुमार सैनी ग्रामपोस्ट–रनियाला दयालपुर ब्लॉक–नकुड जिला – सहारनपुर मो0 –9761675367 उम्र–45 वर्ष शिक्षा –कक्षा 10 जोत– 0.68है0	
• **विषय क्षेत्र**	:	उद्यान/ संरक्षित कृषि व फसल विविधीकरण	
• **समस्या/चुनौती**	:	कम लागत से स्वरोजगार स्थापित कर वर्ष भर आय अर्जित कर अधिक लाभ प्राप्त करना।	
• **तकनीक का विवरण**	:	श्री राकेश कुमार सैनी सब्जी उत्पादन में विशेष रुचि रखते हैं और किसानों के बीच वर्ष भर सब्जी उत्पादन व अगेती सब्जी उत्पादन के प्रचलन बढ़ते देख समय रहते हुए अच्छी उत्पादकता व गुणवत्ता युक्त वेराइटी व हाइब्रिड पौध की बढ़ती हुई माँग को देखते हुए सब्जी नर्सरी उत्पादन के कार्य को अपनाया।	
• **व्यवहारिक उपयोगिता**	:	सब्जी की व्यवसायिक खेती में अधिक लाभ हेतु अच्छी उत्पादकता व गुणवत्ता युक्त वेराइटी व हाइब्रिड पौध व अगेती खेती का मुख्य योगदान है। संरक्षित खेती की लो–टनल पद्धति का उपयोग करके किसान अपने उत्पादन को दोगुना कर सकते हैं। इससे पानी के उपयोग में 50 से 70 प्रतिशत की कमी आती है। जल्दी और गुणवत्तायुक्त पौध तैयार होने के कारण फसल भी जल्दी तैयार होती है जिसके फलस्वरूप किसानों को उनकी उपज के अनुकूल मूल्य भी प्राप्त होते हैं।	
• **आर्थिकी**	:	➢ स्वस्थ व अधिक गुणवत्तायुक्त पौध के उत्पादन से व्यावसायिक खेती में बढ़ोतरी व शुद्ध आय में वृद्धि। ➢ सालाना एक एकड़ में लो टनल विधि से पौध द्वारा लगायी जाने वाली सब्जियां जैसे बैंगन की 5.0 लाख पौध, मिर्च की 6 लाख पौध, गोभी वर्गीय की 3–4 लाख पौध, प्याज की 10 क्विंटल पौध व कद्दू वर्गीय की 1.5–2 लाख पौध बेचकर 6.25 लाख की शुद्ध आय प्राप्त करते हैं। ➢ वर्ष 2019 से 10 हजार की लागत से परंपरागत विधि से सब्जी की नर्सरी तकनीक की शुरुआत की व वर्ष 2022 से लो टनल विधि अपनाकर अपनी आमदनी को बढ़ाया।	
• **तकनीकी ग्राह्यता एवं क्षैतिज विस्तार**	:	कृषकों में यह व्यवसाय दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है । 19 कृषकों तक तकनीकी का विस्तार किया।	
• **समाजिक स्तर**	:	➢ वर्तमान में अपने परिवार को अच्छा जीवन व बच्चों को उच्च शिक्षा दे रहे हैं व अपने लिए एक आधुनिक मकान तैयार किया। ➢ सामाजिक – किसान के जीवन स्तर में सुधार । ➢ आर्थिक – आर्थिक स्थिति में सुधार ।	

लो पॉली टनल द्वारा सब्जी नर्सरी उत्पादन	पॉली टनल के अंदर गोभी वर्गीय पौध उत्पादन